मैदानी शोध कार्य और यौन शोषण

विनता विश्वनाथन

विज्ञान की कई शाखाओं में फील्ड वर्क एक अनिवार्य हिस्सा होता है। फील्ड वर्क की परिस्थितियों में यौन शोषण का मुद्दा अब तक ओझल ही रहा है। यूएस में मानव विज्ञान के संदर्भ में इस बाबत किए गए एक सर्वेक्षण में हिस्सा लेने वालों में से 59 प्रतिशत लोगों ने कहा कि फील्ड में उन्होंने अनुचित टिप्पणियां सुनी थीं और लगभग 18 प्रतिशत ने कहा कि उन पर शारीरिक, यौन शोषण या हमला हुआ था। ज़्यादातर दिक्कत महिलाओं को हुई थी और यौन शोषण खास उन संदर्भों में हुआ था जब दो लोग असमान ताकत या ओहदे के थे।

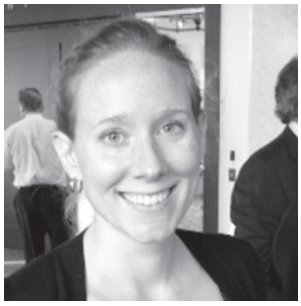

प्राइवेट कम्पनी या सरकारी दफ्तर, फैक्ट्री, सेवाएं या व्यवसाय, खेल-कूद, मीडिया, राजनीति या फिर शिक्षा। विभिन्न क्षेत्रों से कार्यस्थल पर हो रहे यौन शोषण के किस्सों की खबर हमें मिलती रहती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चाहे पीड़ित महिला हो या पुरुष, शोषण दूसरों की नज़रों में हल्का हो या गम्भीर, इन घटनाओं के कारण पीड़ितों पर काफी गहरा प्रभाव पड़ सकता है। इस हद तक कि वे अपने काम से ही नहीं, ज़िन्दगी से भी निराश हो सकते हैं।

यौन शोषण का लोगों पर, उनके काम, दिमागी हालत पर, खुशहाली, परिवार-दोस्तों, भविष्य पर कितना और कब तक असर होता है, इसके बारे में हम काफी जानते हैं। और यौन शोषण से पीड़ित लोगों को उचित मदद उपलब्ध हो, उनको न्याय मिले, इन सब चीज़ों के लिए ये जानकारियां बहुत ज़रूरी हैं। लेकिन विभिन्न कार्यस्थलों में इस समस्या को समझने के लिए, इसका हल निकालने के लिए यह भी जानना बहुत ज़रूरी है कि यौन शोषण की आवृत्ति कितनी है, कितने प्रतिशत लोग इससे पीड़ित हैं, ज़्यादातर किन संदर्भों में ऐसे हादसे होते हैं और क्यों होते हैं। गम्भीर और भावुक मुद्दा है, लेकिन सिर्फ किस्सों के आधार पर इसका हल नहीं निकाला जा सकता। आंकड़े भी ज़रूरी हैं किसी भी मुद्दे की वास्तविकता को समझने के लिए। और इस दिशा में कोशिश संयुक्त राज्य अमरीका के इलनॉय विश्वविद्यालय की कैथरिन क्लैन्सी ने की है।

कैथरिन क्लैन्सी एक मानव वैज्ञानिक हैं। महिला वैज्ञानिकों से जुड़े मुद्दों में भी उनकी रुचि है। अपनी पीएचडी के समय उन्होंने ग्रामीण पॉलैंड में काम किया था। उनके साथ अन्य शोधकर्ता भी थे जो इत्तफाक से सब महिलाएं थीं। उनको याद है कि दिन भर स्थानीय महिलाओं से प्रजनन सम्बंधी सूचना इकट्ठा करने के बाद शोधकर्ता साथ बैठकर बोर्ड गेम्स खेलती थीं और पॉप म्यूज़िक सुनती थीं। कैथरिन क्लैन्सी के लिए फील्ड के वे दिन सुनहरे, जादुई थे।

2011 में उनको पता चला कि कुछ लोगों के लिए फील्ड की कुछ अलग यादें थीं। एक दिन कॉफी पीते समय उनकी दोस्त ने हिचकिचाते हुए कैथरिन क्लैन्सी को बताया कि फील्ड वर्क के समय एक सहकर्मी ने उनसे बलात्कार किया था। उस दोस्त के सलाहकार ने उन्हें यह हिदायत दी थी कि अपने कैरियर को ध्यान में रखते हुए वे कोई शिकायत दर्ज न करें। कुछ करने की इच्छा के जोश में 2012 में अपने ब्लॉग में कैथरिन क्लैन्सी अपने दोस्तों और अन्य लोगों के यौन शोषण की कहानियों छापने लगीं। जल्द ही उनको एहसास हुआ कि मात्र किस्से पर्याप्त नहीं हैं - जब ब्लॉग पर मानव विज्ञान के शोधकर्ताओं के अनुभव छपने लगे तो कैथरिन क्लैन्सी के पास ऐसे किस्सों की बाढ़ लग गई। कुछ पुरानी घटनाएं थीं, कई हाल ही में हुईं थी। ये किस्से कभी गुस्से-भरे शब्दों में तो कभी उखड़ी हुई आवाज़ों में उनके पास पहुंचते।

फिर कैथरिन क्लैन्सी ने इस विषय पर अध्ययन करने का निश्चय किया और अन्य विश्वविद्यालयों के तीन साथियों

से मिल गईं। उन्होंने एक वेब व टेलीफोन आधारित सर्वेक्षण किया जिसमें मानव विज्ञान के क्षेत्र से 124 लोगों ने हिस्सा लिया। यौन और अन्य किस्म के शोषण पर सवाल इस सर्वेक्षण में शामिल थे। और इस सर्वेक्षण के नतीजे कुछ ऐसे थे। सर्वेक्षण में हिस्सा लेने वालों में से 59 प्रतिशत लोगों ने कहा कि फील्ड में उन्होंने अनुचित टिप्पणियां सुनी थीं और लगभग 18 प्रतिशत ने कहा कि उन पर शारीरिक, यौन शोषण या हमला हुआ था। ज़्यादातर दिक्कत महिलाओं को हुई थी और यौन शोषण खास उन संदर्भों में हुआ था जब दो लोग असमान ताकत या ओहदे के थे। सबसे अधिक (80 प्रतिशत) ज़्यादतियां तो विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने की थीं, अस्थाई या स्थानीय कर्मचारी कम ज़िम्मेदार थे। यह बात इतने समय तक बाहर नहीं निकली क्योंकि पीड़ितों को डर था कि एक सहकर्मी या वरिष्ठ के खिलाफ कुछ कहेंगे तो अपने डैटा या फन्डिंग से उनको अलग कर दिया जाएगा। इस अध्ययन से, खासकर इन आंकड़ों से कई लोगों को धक्का लगा है।

फिर समूह ने इस सर्वेक्षण में ऐसे अन्य विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों को शामिल किया जिनमें फील्ड में काम किया जाता है। 666 सहभागियों पर आधारित आंकड़ों में पहले अध्ययन से ज़्यादा कुछ फर्क नहीं दिखा। यह शोध दिसम्बर 2013 में छपा है। वैसे कैथरिन क्लैन्सी और उनके साथियों ने चेतावनी के तौर पर कहा है कि हो सकता है कि सिर्फ उन लोगों ने सर्वेक्षण के फॉर्म/सारे सवालों को पूरा किया जिनके साथ यौन शोषण हुआ है। लेकिन फिर भी मानव वैज्ञानिक और अन्य वैज्ञानिक इस बात पर चौंके ज़रूर हैं कि यह समस्या कुछ दो-चार लोगों की नहीं है।

फील्ड में - विश्वविद्यालय से दूर, अपने डिपार्टमेंट से दूर, अन्य अधिकारियों से, अपने परिवारों से दूर, अक्सर शहर-गांव से दूर एक खास परिस्थिति बनती है जहां शायद कुछ लोगों को लगता है कि यौन शोषण करके बच सकते हैं। कैथरिन क्लैन्सी के शोध से भी कुछ ऐसा ही लगता है। बड़े और व्यवस्थित फील्ड स्टेशन में, जहां ज़्यादा लोग थे और महिलाएं थीं, खासकर नेतृत्व की भूमिकाओं में, वहां से शोषण की कम घटनाओं के बारे में सुनने को मिला। अमरीका के विश्वविद्यालयों के कैम्पसों पर यौन शोषण को रोकने के लिए कई सारे नियम कानून बने हैं, जागरूकता अभियान लगातार चलाए जाते हैं। अगर तहकीकात के बाद यह तय होता है कि शोषण हुआ है, तो मुलज़िम को विश्वविद्यालय से बर्खास्त किया जा सकता है। ऐसा लगता है कि ये सब इन्तज़ाम कैम्पस में प्रभावशाली हैं लेकिन फील्ड में कुछ अधिक करने की ज़रूरत है।

अगर बात सिर्फ किस्सों तक सीमित रहती तो इन शैक्षणिक क्षेत्रों के लोगों को शायद ही पता चलता कि उनके कर्मचारियों, विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को फील्ड में कितनी अश्लीलता और हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। शिकायत करने पर उस व्यक्ति को विश्वविद्यालय से मदद ज़रूर मिलती है लेकिन फील्ड वर्क की इस समस्या को एक बड़े स्तर पर सुलझाने की कोशिश नहीं होती। अब इस बाबत सुझाव आने लगे हैं। इस अध्ययन के बाद कैथरिन क्लैन्सी और साथियों को अलग-अलग विश्वविद्यालयों से ऐसे व्यवस्थित मात्रात्मक अध्ययन की ढेरों दर्खास्त आई हैं।

तो भारत में क्या परिस्थिति है? हमारे स्कूल-कॉलेज-युनिवर्सिटी के कैम्पस से यौन-शोषण के किस्से सुनने को तो मिलते हैं। और जहां हमारे समाज में यह इतनी बड़ी समस्या है, यह कहना कि फील्ड की परिस्थितियों में भी महिलाओं और पुरुषों को ऐसी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, कुछ गलत न होगा। लेकिन यह कितनी बड़ी समस्या है, इसका तो हमें अन्दाज़ भी नहीं है क्योंकि इसका जायज़ा किसी ने आज तक लिया नहीं है। फील्ड में काम करने की परम्परा हमारे विश्वविद्यालयों में काफी सालों से चल रही है। खासकर समाज सेवा, मार्केटिंग, शिक्षा और वन्य जीव जैसे विषयों के विद्यार्थी व कर्मचारी सालों से फील्ड में उतरते रहे हैं।

अट्ठारह साल पहले तामिलनाडु के जंगलों में मैं पहली बार शोध के लिए गई। चौदह साल के व्यक्तिगत और दोस्त-सहकर्मियों के अनुभव के बाद इतना तो कह सकती हूं कि यौन शोषण फील्ड में होता है। लेकिन इसकी शिकायत बहुत ही कम होती है। शायद लोगों को फील्ड से वापस बुलाए जाने और डैटा छिन जाने का डर या फिर सिफारिश

पर निर्भर कैरियर के खत्म होने का डर है। और तो और, कई विषयों में आगे बढ़ने के लिए फील्ड वर्क का अनुभव अनिवार्य होता है। शायद इन्हीं कारणों से शोषण की बातें औपचारिक रूप से बाहर नहीं निकलती हैं।

मेरी पीढ़ी के लोगों के साथ एक समस्या यह भी थी - जो मुझे लगता है कि कई लोगों के लिए आज भी है - कि हम काफी संघर्ष के बाद, परिवार से लड़कर ऐसे काम करने निकले थे जो थोड़ा हट कर था। शिकायत न करने की एक वजह यह डर भी था कि कहीं शोषण को एक बहाना बनाकर परिवार वाले हमें घर लौटने पर मजबूर न कर दें। हमारी दिक्कतों को समझकर हमें उनसे निपटने में मदद करना न परिवार वालों को पता था, न ही हमारे शैक्षणिक विभागों में इसकी तैयारी थी। मुझे याद है कि अपने युनिवर्सिटी कैम्पस में कुछ लड़कों ने हमसे छेड़खानी की थी और उसकी शिकायत जब हमने लिखित में की थी तो कुछ नहीं हुआ। खैर, आजकल विशाखा केस के बाद, सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार तो ऐसा हो नहीं सकता है। लेकिन शिकायत करने के निर्णय तक पहुंचना आज भी बहुत कठिन है। मुझे लगता है कि इसकी एक वजह शायद यह बात है कि हमारे ज़ेहन में एक बात जमी नहीं है कि हमें मौखिक या शारीरिक शोषण को सहने की ज़रूरत नहीं है। पुरुष या महिला, मुझे लगता है कि हम सब में रोष कम है। सहन कर लेते हैं, यही हमारी आदत रही है। अपनी बात कहूं तो मुझे कभी सूझा ही नहीं कि फील्ड में तनाव-रहित रहने का मेरा/हमारा हक है। और इसमें मेरी/हमारी मदद करना हमारे विश्वविद्यालय, प्रोफेसरों और सहकर्मियों की भूमिका, ज़िम्मेदारी तक है।

आजकल परिस्थितियां कुछ बदली तो हैं लेकिन गिनी-चुनी दर्ज शिकायतों को देखकर यह मान लेना कि फील्ड में यौन शोषण बहुत बड़ी समस्या नहीं है, गलत होगा। अच्छा लगेगा अगर यही सच है, लेकिन जब तक कैथरिन क्लैन्सी और साथियों के शोध जैसे अध्ययन भारत के विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में नहीं होते हैं, हम सिर्फ हवा में बातें कर सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत अप्रैल 2014
अंक 303

- **भारत में देशज ज्ञान एवं तकनीक**
- **वैज्ञानिक क्या आजकल कम पढ़ते हैं?**
- **जर्मनी में पर्यावरण संरक्षण की अनुकरणीय मिसालें**
- **बूढ़े पेड़ ज़्यादा तेज़ी से बढ़ते हैं**
- **कांटेक्ट लेंसः एक नैदानिक उपकरण**